कविता

रहस्यमयी औरत

डॉ. रेनू यादव,
फेकल्टी असोसिएट,
भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग (हिन्दी),
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, यमुना एक्सप्रेस-वे,
ग्रेटर नोएडा. पिन – 201312 (उ.प्र.)
फोन – 09810703368
Email: renuyadav0584@gmail.com

डॉ. रेनू यादव, **रहस्यमयी औरत** आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(78-79)

रहस्यमयी औरत

सिंकती रहती है
संदेह की आँच पर
खदबदाते दिमाग में
घेर ली जाती है जहाँ-तहाँ
ढाँक-तोप कर रखने की चाह में
कभी भक्क से
तो कभी भभक कर
जलती बुझती है
जर-बुता जाती है आँच
नोचने खाने की चाह से
खुद को बचा पाने की कवायद
बना देता है
उसे और भी पत्थर

चकमक दुनियाँ से छुपकर
बना लेती है गर्म रेतिली खोह

जिसमें से निकलते हैं
रह रह कर लाल-लाल लावे
कभी बह जाती नदी बन कर
नगर के नीचे पाताल लोक में
तलाशती है अपना खोया वजूद
खोह और पाताल के
आलोकमय रहस्य
में बन जाती है
स्वयं भी रहस्यमयी

बिछा लेती है मकड़ी का जाल
ओढ़ लेती है
लौह-चादर
पारदर्शी होते हुए भी
पारदर्शितापन
हो जाती है बाधित

दूरबीन के दृश्य-पटल पर
बिछी होती है
व्यंग्य-पुष्पों की शैया
दृष्टि-वाण की नोक पर
सदा चला करती है
अकेली रहस्यमयी औरत